B.A Part 1 (H) Philosophy

डा० अनीता कुमारी गुप्ता
जे० के० कॉलेज बिरौल

Date / /
Page

जैन दर्शन में स्याद्वाद

Ans:- जैन दर्शन के अनुसार परोक्ष या अपरोक्ष प्रमाणों द्वारा अभिमत पदार्थ अनन्त धर्मात्मक है। उनमें अस्ति और नास्ति वाचक गुणों के अतिरिक्त देशकालादि की परिस्थितियों के आधार पर अनन्त धर्मों की प्रतिष्ठा जैन-दर्शन के अनुसार की गई है। ऐसी अवस्था में किसी वस्तु का ऐकान्तिक वर्णन सत्य नहीं कहा जा सकता। धर्मी के संबंध में निर्णय देने वाले छः अंधों का निदर्शन देकर जहाँ दूसरे दर्शनों में विरोध की आशंका को दृढ़ किया, वहाँ जैन दार्शनिकों ने अपने से भिन्न दर्शनों के सिद्धांतों-नयों को आंशिक सत्य बताया। किसी के भी निर्णय का पूर्ण रूप से सत्य होना असंभव है, अतः मनुष्य का निर्णय आंशिक सत्यता तक ही पहुँच सकता है। इस निर्णय की पूर्णता एवं वास्तविकता को प्राप्त करने हेतु सत्य निर्णय का रूप बनाने की प्रक्रिया को जैन दर्शन में 'स्याद्वाद' के नाम से अभिहित किया जाता है। जैसा कि पहले बताया गया है कि घट के सत्ताविषयक निर्णय को ही ले लिया जाय। जब कोई घड़े को देखकर कहता है कि 'घड़ा' है, तब विचार कर देखा जाए तो दोनों कर्ता और क्रिया तथा उसका संबंध सर्वांशतः सत्य नहीं है। यदि उसमें सत्तावाचक 'है' को सर्वांश में सत्य माना जाए तो ~~दोनों को और किसान तथा उसका~~ मिट्टी है, कपड़ा है आदि जितनी भी सत्ताएँ हैं वे सभी वाक्य के 'है' से अभिव्यक्त होनी चाहिए। परन्तु घड़े के प्रयोग ने उन सबकी अभिव्यक्ति रोक दी और केवल घड़े की अभिव्यक्ति ही शेष रह गई। नास्तिवाचक प्रक्रिया के आधार पर किसी भी विषय की सत्ता में अनेक या असंख्य पदार्थों की असत्ता का भी समावेश रहता है। इसीलिए बौद्ध दर्शन सभी पदार्थों को स्वेतर पदार्थों के अभाव रूप से ही सत्य मानता है। उनके भावात्मक रूप को वह तुच्छ या नगण्य मानता है। परन्तु जैन-दर्शन भावात्मक तथा अभावात्मक दोनों ही रूपों को अंशतः सत्य मानता है। इसलिए जैन-दर्शनों में 'स्याद्वाद' का आविष्कार हुआ है। इसका भाव यह है कि किसी निर्णय को प्रतिपादित करते समय उसके पूर्व 'स्यात्' लगा कर अभिव्यक्त करना ही निर्णय में सत्यता ला सकता है। इस 'स्यात्' शब्द का अर्थ किसी भी अभिव्यक्ति सहज हो जाय। सप्तभंगी नय (i) स्यादस्ति (ii) स्यान्नास्ति (iii) स्याद अस्ति नास्ति च (iv) स्यात् अवक्तव्यम (v) स्यादस्ति चावक्तव्यं च (vi) स्यान्नास्ति चावक्तव्यं च (vii) स्यादस्ति च नास्ति च अवक्तव्यं च प्रत्येक वस्तु के अनन्त गुणों के द्योतन के लिए ये सात ही नय या निर्णय पर्याप्त समझे जाते हैं।

——×——